सब ताज उछाले जाएँगे सब तख़्त गिराए जाएँगे...

फैज अहमद फैज

सब ताज उछाले जाएँगे
सब तख़्त गिराए जाएँगे...

लाज़मि है कि हम भी देखेंगे
वो दिन कि जिस का वादा है
जो लौह-ए-अजल में लिख्खा है
जब ज़ुल्म-ओ-सितम के कोह-ए-गिराँ
रूई की तरह उड़ जाएँगे
हम महकूमों के पाँव-तले
जब धरती धड़-धड़ धड़केगी
और अहल-ए-हकम के सर-ऊपर
जब बिजली कड़-कड़ कड़केगी
जब अर्ज़-ए-ख़ुदा के काबे से
सब बुत उठवाए जाएँगे
हम अहल-ए-सफ़ा मरदूद-ए-हरम
मसनद पे बिठाए जाएँगे

सब ताज उछाले जाएँगे
सब तख़्त गिराए जाएँगे
बस नाम रहेगा अल्लाह का
जो ग़ाएब भी है हाज़िर भी
जो मंज़र भी है नाजिर भी
उट्ठेगा अनल-हक़ का नारा
जो मैं भी हूँ और तुम भी हो
और राज करेगी ख़ल्क़-ए-ख़ुदा
जो मैं भी हूँ और तुम भी हो

क़ुरबानी न फ़र्ज़ है न वाजिब है

फरहत दुर्रानी

क़ुरबानी न फ़र्ज़ है और न वाजिब सिवाए हज के दौरान, हजरत इब्राहीम का ये टेस्ट सिर्फ इब्राहीम के लिए था ना कि लोगो के लिए। एनिमल सैक्रिफाइस करना है तो वो भी सिर्फ काबा (बैतुल अतीक, एंशेंट हाउस) पर ही हो सकता है। सूरा 22 अल हज वर्सेज 25-37।

यही बात गोल कर दी गई है, और पूरी क़ौम पर इसका बोझ डाल दिया गया कि जो साहिब-ए-हैसियत नहीं है वो भी बकरा क़र्ज़ ले दे कर क़ुरबानी करने को मजबूर है, और बकरा भी कहीं रियायती दामों पर नहीं मिलता , महंगे से महंगा ही दस्तयाब है, यानि जानवर से ज़्यादा इंसान की खाल उतारी जा रही है। इंसान अपनी ज़बान का ग़ुलाम है और ले दे के सारे झगड़े/ युद्ध भी बलशाली बनने के लिए दुनिया भर की ऐशपरस्ती हासिल करने के लिए ही हैं, मानव भी एक समाजिक पशु ही है और दूसरे पशुओं को प्राचीन काल से खाता आया है तो इसमें और भी गिरावट की ही सम्भावना है, कि कल को ज़ायक़े के लिए दूसरे मनुष्यों को ही न खाने लगे, वैसे भी नरभक्षता के बहुत से उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं, हां प्रकृति स्वयं इस पर लग़ाम ला सकती है, मांस जनित रोगों के द्वारा। मनुष्य मांस भक्षण तभी छोड़ेगा जब उसे अपनी जान का ख़तरा होगा।

रही बात क़ुरबानी की तो त्यौहार खाने पीने उत्सव मनाने का एक ज़रिया भर हैं, बस बहाना ढूंढा जाता है किसी न किसी पहलू से, वरना इसका कोई औचित्य ही नहीं है कि अल्लाह ने अपने एक नबी का इम्तिहान लिया, तो आपको ये लाइसेंस कैसे मिल गया कि आप जानवरों को उस दिन की याद में ज़बिह करने लगे, और यदि याद ही मनाना मक़सूद है तो अपने बेटों को ज़बिह करिए की इब्राहीम अ.स. ने ऐसा किया था। मगर यहां भी चालाकी से अपने खाने पीने का इंतिज़ाम मज़हब की आड़ में कर लिया।

2.2 ट्रिलियन के सबसे बड़े कर्जदार पूंजीपति हैं अडानी, अगर वो देश छोड़कर भाग गए तो क्या होगा ?

दिनकर कुमार

अडानी ग्रुप देश में तेजी से कारोबार फैलाने वाला बिजनेस समूह है। मौजूदा समय में ग्रुप के अंतर्गत अडानी एंटरप्राइज, अडानी पावर, अडानी ग्रीन, अडानी ट्रांसमिशन, अडानी गैस और अडानी पोर्ट है। अंबानी ग्रुप की सभी कंपनियों पर 2.18 लाख करोड़ रुपए का कर्ज है। दरअसल वित्त वर्ष 2021-22 के अंत यानी मार्च 2022 तक गौतम अडानी ग्रुप की कंपनियों का कर्ज पिछले साल की तुलना में 42 प्रतिशत से ज्यादा बढ़ चुका है। जानकारी के मुताबिक पिछले साल अडानी ग्रुप की सभी कंपनियों पर कुल मिलाकर करीब 1.57 लाख करोड़ रुपए का कर्ज था, लेकिन इस वर्ष अडानी के कर्ज में एक बार फिर एक बड़ा उछाल देखा गया है।

हेनान में बैंक फ्रॉड के खिलाफ ऐतिहासिक प्रदर्शन, फ्रॉड गैंग के कई सदस्य गिरफ्तार, सवालों के घेरे में जिनपिंग सरकार मोदी सरकार ने अडानी का किया 4.5 लाख करोड़ का कर्जा माफ, जबकि 2016 से हर दूसरे साल अडानी की संपत्ति हो रही दोगुनी खास बात यह है कि 2.2 ट्रिलियन का कर्ज जहां मात्र अडानी की कंपनी के पास है, तो वहीं दूसरी ओर बड़ी खबर यह है कि भारत का कुल रिजर्व ही 4.7 ट्रिलियन रुपये का है। इसका सीधा मतलब यह हुआ है कि भारत के रिजर्व का लगभग आधा पैसा देश की एक कंपनी के हाथों में गया है। ऐसे में अगर अडानी भारत छोड़कर भाग गये तो देश सड़क पर आ जायेगा, जिसे संभालना मुश्किल ही नहीं असंभव हो जायेगा। यानी श्रीलंका से भी बदतर हालात हो जायेंगे हमारे देश के। वित्त वर्ष 2021-22 में अडानी समूह की संयुक्त उधारी 40.5 प्रतिशत बढ़कर लगभग 2.21 लाख करोड़ रुपये हो गई। पिछले वित्त वर्ष में यह 1.57 लाख करोड़ रुपये था। द मॉर्निंग कॉन्टेक्स्ट के आंकड़ों के मुताबिक, समूह की कंपनियों में कर्ज में सबसे ज्यादा वृद्धि इसकी प्रमुख इकाई अडानी एंटरप्राइजेज में दर्ज की गई, जो साल-दर-साल 155 प्रतिशत बढ़कर 2021-22 में 41,024 करोड़ रुपये हो गई।

क्या हैदराबाद का ओरिजिनल नाम कभी भाग्यनगर था? समूह की संस्थाओं में, अडानी पावर और अडानी विल्मर ने अपनी उधारी में कमी देखी। वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान अडाणी पावर की उधारी 48,796 करोड़ रुपये रही, जो एक साल पहले के 52,411 करोड़ रुपये की तुलना में 6.9 प्रतिशत कम है। आंकड़ों के अनुसार, अडानी विल्मर ने 2021-22 में अपनी उधारी में 12.9 प्रतिशत की गिरावट के साथ 2,568 करोड़ रुपये की गिरावट देखी, जो पिछले वित्त वर्ष में 2,950 करोड़ रुपये थी।

भारत के दो सबसे बड़े उद्योगपति गौतम अडानी और मुकेश अंबानी पर है भारी विदेशी कर्ज, इस रिपोर्ट में हुआ खुलासा वित्त वर्ष के दौरान अडानी ग्रीन एनर्जी की उधारी 118.6 प्रतिशत बढ़कर 52,188 करोड़ रुपये हो गई, जबकि 2020-21 में यह 23,874 करोड़ रुपये थी। अडानी पोर्ट्स और एसईजेड का कर्ज एक साल पहले के 34,401 करोड़ रुपये से 32.1 फीसदी बढ़कर 45,453 करोड़ रुपये हो गया। अडानी ट्रांसमिशन में पिछले वर्ष के 26,961 करोड़ रुपये की तुलना में 10.6 प्रतिशत बढ़कर 29,815 करोड़ रुपये हो गया, जबकि अडानी टोटल गैस की उधारी एक साल पहले के 488 करोड़ रुपये से 2021-22 में 103.9 प्रतिशत बढ़कर 995 करोड़ रुपये हो गई।

पापुलेशन ब्लास्ट, आठ अरब होने जा रही है विश्व की जनसंख्या द मॉर्निंग कॉन्टेक्स्ट के आंकड़ों के अनुसार, समूह के लिए कुल उधारी वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान 2,20,838 करोड़ रुपये थी, जो एक साल पहले 1,57,137 करोड़ रुपये के मुकाबले 40.5 प्रतिशत की छलांग थी। मार्च के अंत में समूह का सकल ऋण-से-इक्विटी अनुपात 2.36 के चार साल के उच्च स्तर पर था, जो एक साल पहले 2.02 से अधिक और वित्त वर्ष 2019 के अंत में 1.98 के निचले स्तर पर था। ADANI के बंदरगाह पर पकड़ी गई ड्रग्स की यह कोई पहली खेप नहीं, बल्कि ड्रग ट्रैफिकिंग का बड़ा अड्डा है मुंद्रा पोर्ट, जानिए कब क्या आया! गौतम अडानी पिछले कुछ महीनों में विविधीकरण की होड़ में रहे हैं। उन्होंने हाल ही में होल्सिम से एसीसी और अंबुजा सीमेंट को 10.5 अरब डॉलर (करीब 80,800 करोड़ रुपये) में खरीदा है। वह एएमजी मीडिया नेटवर्क्स के साथ मीडिया व्यवसाय में भी प्रवेश कर रहे हैं।

न्यायालयों के फैसले भी पूर्वाग्रह-युक्त और पक्षपातपूर्ण हो सकते हैं? यह सौदा अरबपति अदानी समूह को घरेलू सीमेंट क्षेत्र में दूसरा सबसे बड़ा खिलाड़ी बना देगा और कंपनी के मौजूदा सीमेंट कारोबार - अडानी सीमेंटेशन लिमिटेड और अडानी सीमेंट लिमिटेड को बढ़ावा देने में मदद करेगा। ब्लूमबर्ग के बिलियनेयर्स इंडेक्स के अनुसार, पहली पीढ़ी के उद्यमी गौतम अडानी, जिनकी कुल संपत्ति वर्तमान में 102 बिलियन डॉलर है, ने डेटा सेंटर, डिजिटल सेवाओं, सीमेंट और मीडिया जैसे नए क्षेत्रों में तेजी से विविधता लाई है। ऑस्ट्रेलिया में सबसे विवादास्पद कोयला खनन परियोजनाओं में से एक का अधिग्रहण करने के बाद, अडानी दीर्घकालिक ऊर्जा की दिशा में एक